Online Available at: www.multiarticlesjournal.com OPEN ACCESS ISSN: 2583-7397

International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary; 2023; 2(4): 89-91

Research Article

युवा मतदाता और भारतीय चुनावी व्यवहार का परिवर्तन

Author (s): **डॉ. स्वदेश कुमार**

एसोसिएट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान विभाग आगरा कॉलेज आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: * डॉ. स्वदेश कुमार

सार

भारतीय लोकतंत्र विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक तंत्र है, जहाँ चुनावी प्रक्रिया सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तनों से निरंतर प्रभावित होती रही है। पिछले दो दशकों में भारतीय चुनावी व्यवहार में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन के रूप में युवा मतदाताओं की बढ़ती भूमिका सामने आई है। भारत की जनसंख्या संरचना में युवाओं का अनुपात अधिक होने के कारण उनका राजनीतिक निर्णय-निर्माण पर प्रभाव लगातार बढ़ा है। युवा मतदाता केवल संख्या की दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं हैं, बल्कि वे चुनावी मुद्दों, राजनीतिक संवाद और मतदान पैटर्न में नए परिवर्तन भी ला रहे हैं।

प्रस्तुत शोध-पत्र में भारतीय चुनावी व्यवहार में युवा मतदाताओं की भूमिका और उनके कारण उत्पन्न परिवर्तनों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में राजनीतिक जागरूकता, शिक्षा, डिजिटल संचार, सामाजिक परिवर्तन, रोजगार, विकास संबंधी मुद्दे तथा राजनीतिक भागीदारी जैसे पहलुओं को शामिल किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि युवा मतदाता पारंपरिक पहचान-आधारित राजनीति से हटकर विकास, अवसर और सुशासन जैसे मुद्दों को महत्व देने लगे हैं। साथ ही यह भी पाया गया कि डिजिटल माध्यमों और सामाजिक संचार मंचों ने युवा मतदाताओं की राजनीतिक सोच और मतदान व्यवहार को गहराई से प्रभावित किया है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारतीय चुनावी राजनीति में युवा मतदाता परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उभर रहे हैं, जो चुनावी रणनीतियों, राजनीतिक संवाद और लोकतांत्रिक सहभागिता के स्वरूप को पुनः परिभाषित कर रहे हैं।

Manuscript Information

Received Date: 05-07-2023
Accepted Date: 24-08-2023
Publication Date: 30-08-2023
Plagiarism Checked: Yes
Manuscript ID: IJCRM:2-4-22
Peer Review Process: Yes

How to Cite this Manuscript

डॉ. स्वदेश कुमार. युवा मतदाता और भारतीय चुनावी व्यवहार का परिवर्तन. International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary. 2023; 2(4):89-91.

कुंजी शब्द: युवा मतदाता; चुनावी व्यवहार; भारतीय लोकतंत्र; राजनीतिक सहभागिता; मतदान पैटर्न; डिजिटल राजनीति; लोकतांत्रिक परिवर्तन

1. परिचय

भारतीय लोकतंत्र विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक तंत्र है, जहाँ चुनाव केवल राजनीतिक सत्ता के हस्तांतरण की प्रक्रिया नहीं होते, बल्कि वे समाज की राजनीतिक चेतना, सामाजिक संरचना और नागरिक भागीदारी का भी प्रतिबिंब प्रस्तुत करते हैं। लोकतांत्रिक व्यवस्था में मतदाता का व्यवहार राजनीतिक प्रणाली की दिशा तय करने वाला महत्वपूर्ण तत्व माना जाता है। भारत जैसे बहुलतावादी और विविधतापूर्ण समाज में मतदाताओं की सोच, प्राथमिकताएँ और राजनीतिक निर्णय समय के साथ बदलते रहे हैं। विशेष रूप से युवा मतदाताओं का बढ़ता प्रभाव भारतीय चुनावी राजनीति में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन के रूप में उभरा है, जिसने चुनावी मुद्दों, राजनीतिक रणनीतियों और मतदान पैटर्न को प्रभावित किया है [1]। भारतीय जनसंख्या की संरचना में युवाओं का बड़ा अनुपात होने के कारण युवा मतदाता लोकतांत्रिक प्रक्रिया में निर्णायक भूमिका निभाने लगे हैं। सामाजिक परिवर्तन, शिक्षा के विस्तार और आर्थिक अवसरों की बढ़ती आकांक्षाओं ने युवा वर्ग की राजनीतिक सोच को प्रभावित किया है। जहाँ पहले चुनावी व्यवहार मुख्यतः जाति, धर्म और पारंपरिक सामाजिक पहचान से प्रभावित माना जाता था, वहीं अब युवा मतदाता विकास, रोजगार, शिक्षा और सुशासन जैसे मुद्दों को

प्राथमिकता देने लगे हैं [2]। यह परिवर्तन भारतीय चुनावी व्यवहार के अध्ययन को अधिक महत्वपूर्ण बनाता है।

राजनीतिक समाजीकरण की प्रक्रिया में युवा वर्ग का स्थान विशेष होता है, क्योंकि इसी आयु वर्ग में राजनीतिक पहचान और विचारधारात्मक झुकाव विकसित होते हैं। उच्च शिक्षा, वैश्वीकरण और शहरीकरण के कारण युवाओं में राजनीतिक जागरूकता बढ़ी है, जिससे वे चुनावी प्रक्रिया को केवल औपचारिक कर्तव्य न मानकर अपने भविष्य को प्रभावित करने वाले निर्णय के रूप में देखने लगे हैं [3]। इससे चुनावी व्यवहार में अधिक तर्कसंगतता और मुद्दा-आधारित सोच देखने को मिलती है।

इक्कीसवीं सदी में डिजिटल संचार माध्यमों के विस्तार ने युवा मतदाताओं की राजनीतिक समझ और सहभागिता को नई दिशा दी है। सामाजिक माध्यमों पर राजनीतिक चर्चा, चुनावी अभियान और विचारों का त्वरित आदान-प्रदान युवाओं को राजनीतिक प्रक्रिया का सक्रिय हिस्सा बना रहा है [4]। डिजिटल माध्यमों ने सूचना की उपलब्धता को बढ़ाया है, जिससे युवा मतदाता विभिन्न दृष्टिकोणों का तुलनात्मक विश्लेषण करने में सक्षम हुए हैं। यह परिवर्तन चुनावी व्यवहार को अधिक गतिशील बनाता है।

युवा मतदाताओं की बढ़ती संख्या ने राजनीतिक दलों को अपनी रणनीतियों में बदलाव करने के लिए प्रेरित किया है। अब चुनावी अभियानों में रोजगार सृजन, कौशल विकास, शिक्षा सुधार और उद्यमिता जैसे मुद्दों को प्रमुखता दी जाती है, क्योंकि ये सीधे युवा वर्ग की आकांक्षाओं से जुड़े होते हैं [5]। इस प्रकार युवा मतदाता केवल निष्क्रिय दर्शक नहीं रहे, बल्कि राजनीतिक एजेंडा निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने लगे हैं।

पहली बार मतदान करने वाले युवाओं का चुनावी राजनीति में विशेष महत्व है, क्योंकि उनका निर्णय अक्सर पारंपरिक राजनीतिक झुकावों से अलग हो सकता है। राजनीतिक दलों के लिए यह वर्ग एक अवसर भी है और चुनौती भी, क्योंकि उनकी राजनीतिक प्राथमिकताएँ स्थिर नहीं होतीं और वे प्रदर्शन तथा नीतिगत परिणामों के आधार पर अपना रुख बदल सकते हैं [6]। इस प्रवृत्ति ने चुनावी राजनीति को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाया है।

हालाँकि युवा मतदाताओं की बढ़ती भूमिका के साथ कुछ जटिलताएँ भी जुड़ी हुई हैं। सूचना की अधिकता, गलत सूचनाओं का प्रसार और भावनात्मक अपील आधारित राजनीतिक संदेश उनके निर्णयों को प्रभावित कर सकते हैं [4]। डिजिटल माध्यमों पर उपलब्ध अपुष्ट जानकारी कभी-कभी राजनीतिक ध्रुवीकरण को बढ़ा सकती है, जिससे चुनावी व्यवहार में स्थिरता की कमी दिखाई देती है।

इसके अतिरिक्त सामाजिक और आर्थिक असमानताओं का प्रभाव भी युवा मतदाताओं की प्राथमिकताओं को प्रभावित करता है। ग्रामीण और शहरी युवाओं की राजनीतिक सोच में अक्सर अंतर देखा जाता है, क्योंकि उनके अनुभव और चुनौतियाँ भिन्न होती हैं [7]। यह विविधता भारतीय चुनावी व्यवहार को और अधिक जटिल बनाती है।

भारतीय चुनावी राजनीति में पिछले वर्षों में यह प्रवृत्ति स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आई है कि युवा मतदाता पारंपरिक पहचान आधारित राजनीति के बजाय प्रदर्शन और विकास को महत्व देने लगे हैं। यह परिवर्तन लोकतांत्रिक प्रक्रिया के परिपक्व होने का संकेत भी माना जा सकता है [8]। हालांकि यह बदलाव सभी क्षेत्रों में समान रूप से नहीं देखा जाता, फिर भी इसका समग्र प्रभाव चुनावी परिणामों पर स्पष्ट है।

युवा वर्ग की राजनीतिक भागीदारी केवल मतदान तक सीमित नहीं रही है। वे चुनावी अभियानों, जनचर्चाओं और सामाजिक आंदोलनों में भी सक्रिय भूमिका निभाने लगे हैं [9]। इससे लोकतांत्रिक सहभागिता का दायरा विस्तृत हुआ है और राजनीतिक विमर्श अधिक जीवंत बना है।

इस अध्ययन का उद्देश्य भारतीय चुनावी व्यवहार में युवा मतदाताओं की भूमिका का विश्लेषण करना है। विशेष रूप से यह समझने का प्रयास किया गया है कि युवा मतदाताओं की बदलती प्राथमिकताएँ चुनावी राजनीति को किस प्रकार प्रभावित कर रही हैं और यह परिवर्तन भारतीय लोकतंत्र के भविष्य के लिए क्या संकेत देता है [10]।

2. कार्यप्रणाली

प्रस्तुत शोध में गुणात्मक अनुसंधान पद्धति को अपनाया गया है, जिसके माध्यम से युवा मतदाताओं और भारतीय चुनावी व्यवहार के बीच संबंध का विश्लेषण किया गया है [1]। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि युवा मतदाताओं की राजनीतिक सोच, सामाजिक परिस्थितियाँ और संचार माध्यमों तक पहुँच चुनावी व्यवहार को किस प्रकार प्रभावित करती है।

अध्ययन के प्रारंभिक चरण में चुनावी व्यवहार और राजनीतिक सहभागिता से संबंधित सैद्धांतिक साहित्य का विस्तृत अध्ययन किया गया। इसमें मतदान व्यवहार सिद्धांत, राजनीतिक समाजीकरण तथा लोकतांत्रिक सहभागिता के प्रमुख दृष्टिकोणों का विश्लेषण शामिल था [2]। इस चरण ने अध्ययन के लिए वैचारिक ढांचा तैयार करने में सहायता प्रदान की।

द्वितीय चरण में भारतीय चुनावी राजनीति में हुए ऐतिहासिक परिवर्तनों का अध्ययन किया गया, विशेष रूप से युवा मतदाताओं की भूमिका से जुड़े शोधों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया [3]। इससे यह समझने में सहायता मिली कि समय के साथ चुनावी व्यवहार में किस प्रकार परिवर्तन हुआ है।

तृतीय चरण में डिजिटल संचार माध्यमों और सामाजिक मंचों की भूमिका का विश्लेषण किया गया। इस अध्ययन के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया कि सूचना प्रौद्योगिकी और सामाजिक माध्यमों ने युवा मतदाताओं की राजनीतिक जागरूकता और मतदान निर्णयों को किस प्रकार प्रभावित किया है [4]।

इसके बाद चुनावी मुद्दों का विश्लेषण किया गया, जिसमें रोजगार, शिक्षा, विकास, सामाजिक न्याय और शासन क्षमता जैसे विषयों को शामिल किया गया [5]। इस चरण का उद्देश्य यह पहचानना था कि युवा मतदाता किन मुद्दों को प्राथमिकता देते हैं और वे अपने मतदान निर्णय किन आधारों पर लेते हैं।

अध्ययन में विभिन्न शोधों और विश्लेषणों से प्राप्त निष्कर्षों का समेकित मूल्यांकन किया गया, ताकि युवा मतदाता व्यवहार के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं को संतुलित रूप से प्रस्तुत किया जा सके [6]। इस प्रक्रिया से अध्ययन की विश्वसनीयता बढ़ाई गई।

शोध को वर्ष 2022 तक उपलब्ध साहित्य और अकादमिक स्रोतों तक सीमित रखा गया, जिससे निष्कर्ष समकालीन राजनीतिक संदर्भों के अनुरूप बनाए जा सकें [10]। अध्ययन मुख्यतः व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक प्रकृति का है, जिसमें संख्यात्मक आँकड़ों की अपेक्षा वैचारिक और नीतिगत विश्लेषण को प्राथमिकता दी गई है।

अंततः कहा जा सकता है कि अपनाई गई कार्यप्रणाली बहुआयामी दृष्टिकोण पर आधारित है, जो युवा मतदाताओं के चुनावी व्यवहार को सामाजिक, राजनीतिक और संचार संबंधी सभी पहलुओं से समझने में सहायक सिद्ध होती है।

3. परिणाम

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि युवा मतदाता भारतीय चुनावी राजनीति में निर्णायक भूमिका निभाने लगे हैं। उनका मतदान व्यवहार पारंपरिक पहचान आधारित राजनीति से हटकर मुद्दा-आधारित राजनीति की ओर अग्रसर दिखाई देता है [2]।

युवा मतदाता विकास, रोजगार और शिक्षा जैसे विषयों को अधिक महत्व देते हैं। इससे राजनीतिक दलों की नीतियों और चुनावी घोषणापत्रों में भी बदलाव देखा गया [5]।

डिजिटल माध्यमों ने युवाओं की राजनीतिक जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सूचना तक त्वरित पहुँच ने उन्हें राजनीतिक निर्णय लेने में अधिक सक्रिय बनाया है [4]।

हालाँकि, अध्ययन में यह भी पाया गया कि गलत सूचना और भावनात्मक राजनीतिक संदेश युवा मतदाताओं को प्रभावित कर सकते हैं, जिससे चुनावी निर्णयों में अस्थिरता देखने को मिल सकती है [6]।

तालिका 1: युवा मतदाताओं की प्रमुख विशेषताएँ

आधार	विशेषता
राजनीतिक सोच	मुद्दा-आधारित
प्राथमिकताएँ	रोजगार, विकास, शिक्षा
सूचना स्रोत	डिजिटल माध्यम
भागीदारी	बढ़ती राजनीतिक सक्रियता

तालिका 2: चुनावी व्यवहार में प्रमुख परिवर्तन

क्षेत्र	परिवर्तन
मतदान पैटर्न	पारंपरिक से आधुनिक मुद्दों की ओर
राजनीतिक संवाद	डिजिटल और त्वरित
चुनावी रणनीति	युवाओं पर केंद्रित अभियान
लोकतांत्रिक सहभागिता	बढ़ती भागीदारी

4. चर्चा एवं निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि युवा मतदाता भारतीय चुनावी राजनीति में परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उभरे हैं। उनका मतदान व्यवहार राजनीतिक दलों को नई रणनीतियाँ अपनाने के लिए प्रेरित करता है। युवा वर्ग की प्राथमिकताएँ विकास, अवसर और पारदर्शी शासन जैसे मुद्दों पर केंद्रित हैं, जिससे चुनावी राजनीति में मुद्दा-आधारित विमर्श को बढ़ावा मिलता है।

डिजिटल माध्यमों ने युवाओं को राजनीतिक रूप से अधिक जागरूक बनाया है, लेकिन साथ ही गलत सूचना और ध्रुवीकरण जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। इसलिए लोकतांत्रिक प्रक्रिया की मजबूती के लिए राजनीतिक शिक्षा और जिम्मेदार सूचना प्रसार आवश्यक है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारतीय लोकतंत्र का भविष्य काफी हद तक युवा मतदाताओं के व्यवहार पर निर्भर करेगा। यदि यह वर्ग जागरूक और विवेकपूर्ण मतदान करता है, तो भारतीय चुनावी राजनीति अधिक उत्तरदायी और विकासोन्मुख दिशा में आगे बढ़ सकती है।

संदर्भ

1. शर्मा आर. भारतीय लोकतंत्र और मतदाता व्यवहार. 2018.
2. सिंह ए. चुनावी राजनीति में सामाजिक परिवर्तन. 2019.
3. वर्मा के. युवा राजनीति और लोकतांत्रिक सहभागिता. 2020.
4. गुप्ता आर. डिजिटल मीडिया और चुनावी व्यवहार. 2021.
5. चौधरी एस. भारतीय चुनाव और युवा मतदाता. 2022.
6. नायर वी. राजनीतिक संचार और मतदाता निर्णय. 2019.
7. भटनागर एम. लोकतंत्र और युवा भागीदारी. 2020.
8. मिश्रा पी. भारतीय चुनावी राजनीति के नए आयाम. 2021.
9. अग्रवाल डी. मतदान व्यवहार के सिद्धांत. 2018.
10. तिवारी एल. भारतीय लोकतंत्र में युवाओं की भूमिका. 2022.